8209837844 www.ugc-net.com

UGC NTA NET (हिन्दी साहित्य)

साहित्यशास्त्र (शब्द-शक्ति)

ईकाई-3 भाग-12

By Jyoti
(Hindi Educator)

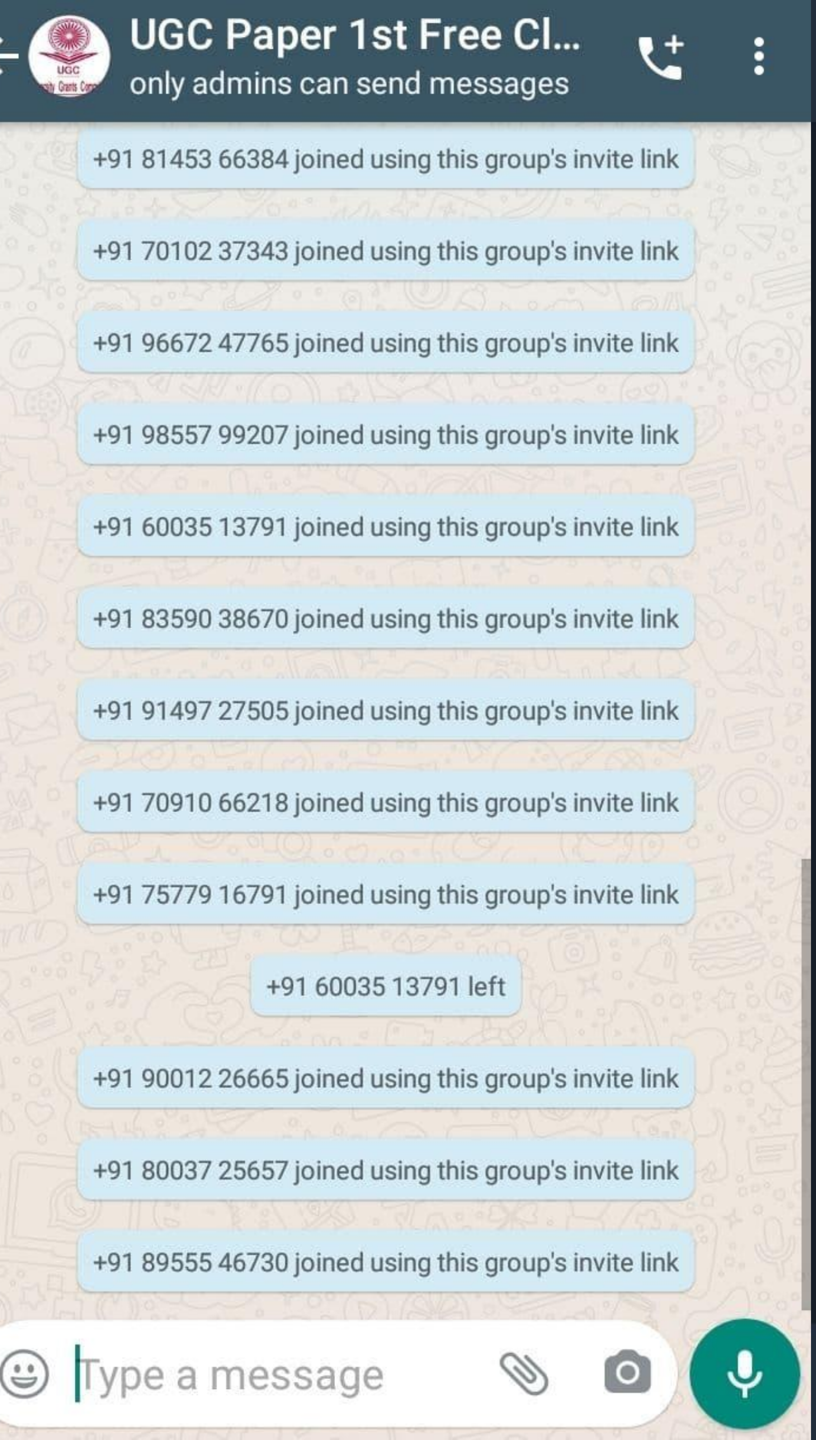
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

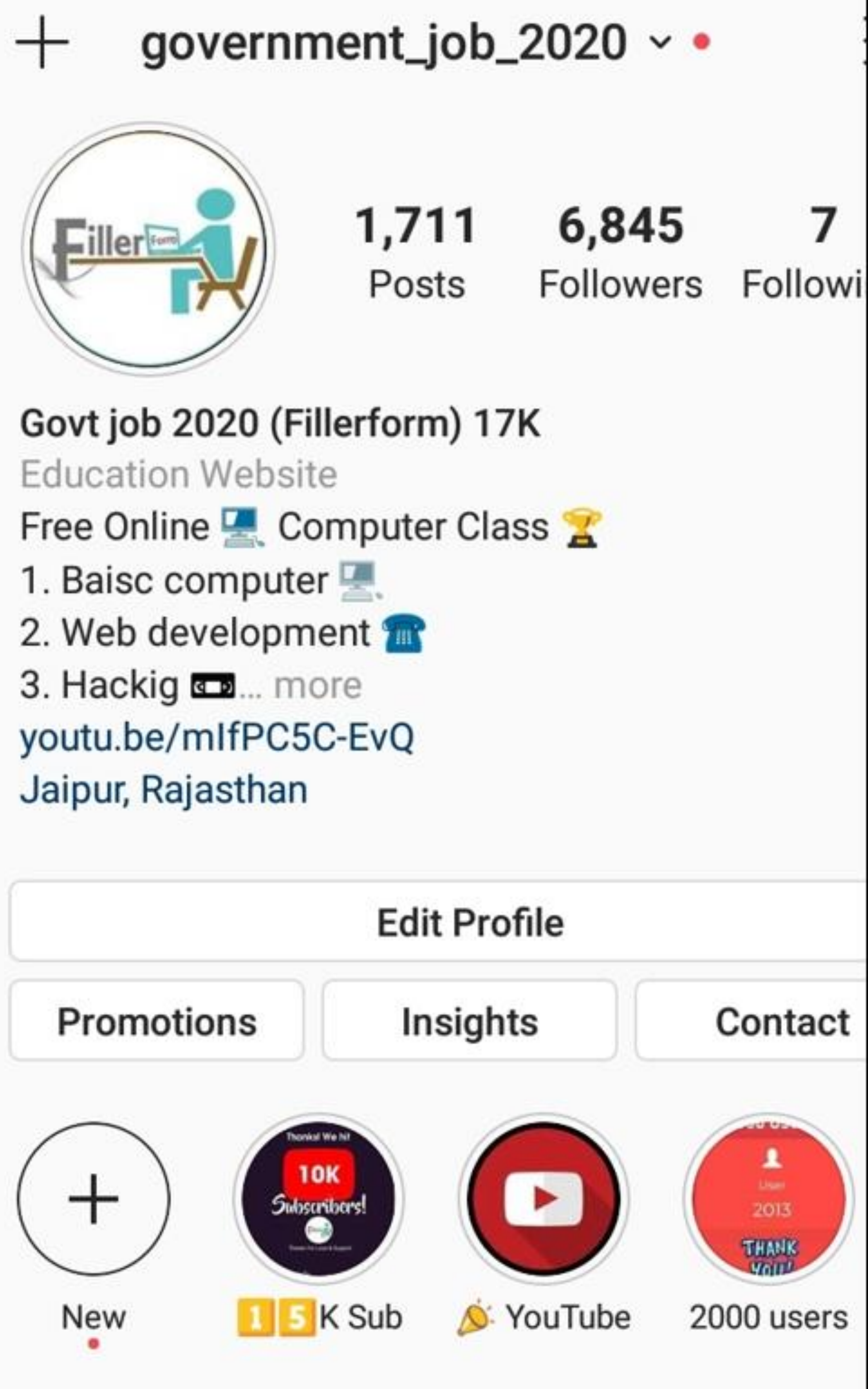
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC-NET 2022

09:00 AM
Current GK

11:00 AM
1st Paper

02:00 PM
1st Paper

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

09:00 PM
Management

January
10

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC-NET 2022

12:00 PM
Hindi-2nd paper

01:00 PM
History-2nd paper

03:00 PM
Commerce – 2nd

04:00 PM
Political sciences

06:00 PM
Sanskrti

08:00 PM
Computer Sce.

09:00 PM
Management

JANUARY
17

fillerform 8209837844 www.ugc-net.com

UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
5000+MCQ+PYQ
Free Books
100% OFF
fillerform
Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching Aptitude By Jitendra Goswami | NET
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers

8209837844

www.ugc-net.com

हिन्दी सिलेबस

इकाई – III

साहित्यशास्त्र

काव्य के लक्षण, काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन।
प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य।
रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।
शब्दशक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष
प्लेटो के काव्य सिद्धान्त।
अरस्तू : अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी विवेचन, विरेचन सिद्धान्त।
वड्र्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त।
कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी।
टी.एस.इलिएट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा।
आई.ए.रिचड्र्स : मूल्य सिद्धान्त, संप्रेषण सिद्धान्त तथा काव्य-भाषा सिद्धान्त। रूसी रुपवाद।
नयी समीक्षा। मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब।

शब्द-शक्ति

8209837844
www.ugc-net.com

शब्द शक्ति का अर्थ और प्रकार

शब्द-शक्ति की परिभाषा

शब्द शक्ति का अर्थ है – शब्द की अभिव्यंजक शक्ति।शब्द का कार्य किसी अर्थ की अभिव्यक्ति तथा उसका बोध करवाना होता है। इस प्रकार शब्द एवं अर्थ का अभिन्न सम्बन्ध है। शब्द एवं अर्थ का सम्बन्ध ही शब्द शक्ति(shbad shakti) है।

’शब्दार्थ सम्बन्धः शक्ति।

अर्थात्(बोधक) शब्द एवं अर्थ के सम्बन्ध को शब्द शक्ति कहते हैं। हम शब्द शक्ति की परिभाषा इस प्रकार भी जान सकते है- ’शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले अर्थ-व्यापारों को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द शक्ति का महत्व –

किसी शब्द का महत्व उसमें निहित अर्थ पर निर्भर होता हैं। बिना अर्थ के शब्द अस्तित्व-विहीन एवं निरर्थक होता है। शब्द शक्ति के शब्द में निहित इसी अर्थ की शक्ति पर विचार किया जाता है। काव्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ ग्रहण से ही काव्य आनन्ददायक बनता है।

अतः शब्द के अर्थ को समझना ही काव्य के आनन्द को प्राप्त करने की प्रधान सीढ़ी हैं और शब्द के अर्थ को समझने के लिए शब्द शक्तियों की जानकारी होना परम आवश्यक हैं।

8209837844

www.ugc-net.com

शब्द शक्ति के भेद

इस प्रकार शब्द के विभिन्न प्रकार के अर्थों के आधार पर शब्द शक्ति(Shabd Shakti) के प्रकारों का निर्धारण किया गया है। शब्द के जितने प्रकार के अर्थ होते हैं, भाषा के जितने प्रकार के अभिप्राय होते हैं, उतने ही प्रकार की शब्द शक्तियां होती हैं।

शब्द के तीन प्रकार के अर्थ स्वीकार किए गए हैं-

1.वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ

2.लक्ष्यार्थ

3.व्यंग्यार्थ

8209837844 www.ugc-net.com

इन अर्थों के आधार पर तीन प्रकार की शब्द शक्तियां मानी गई हैं

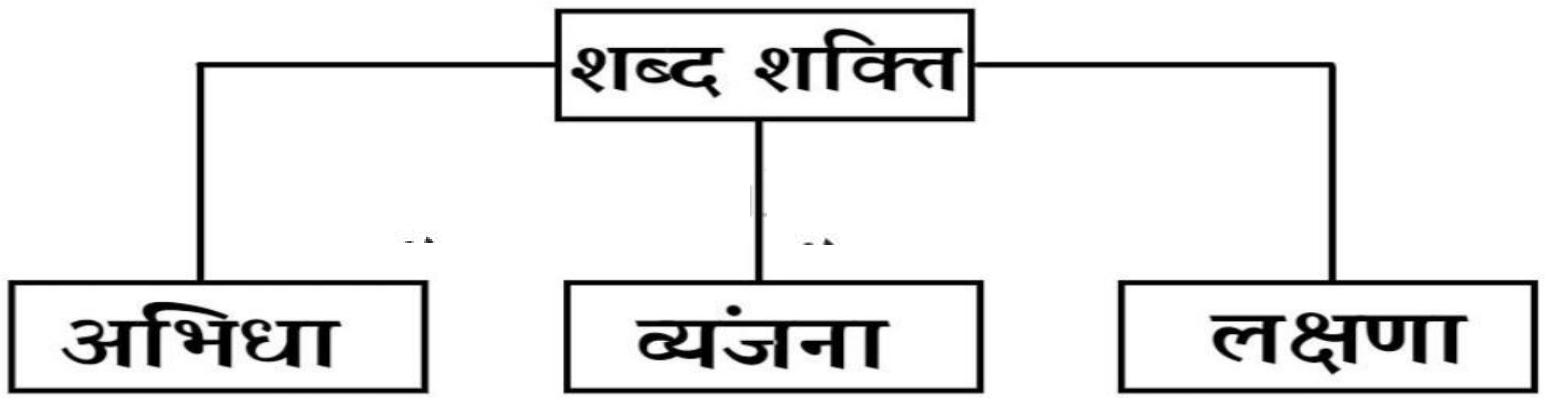

- अभिधा(abidha shbad shakti)
- लक्षणा(laxna shbad shakti)
- व्यंजना(vyanjna shbad shakti)

⇒ कुछ विद्वानों ने तात्पर्य नामक चौथी शब्द शक्ति भी स्वीकार की है, जिसका सम्बन्ध वाक्य से होता है।

(1) अभिधा शब्द शक्ति

शब्द को सुनने अथवा पढ़ने के पश्चात् पाठक अथवा श्रोता को शब्द का जो लोक प्रसिद्ध अर्थ तत्क्षण ज्ञात हो जाता है, वह अर्थ शब्द की जिस सीमा द्वारा मालूम होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

(I) रूढ़: वे शब्द जिनकी उत्पत्ति नहीें होती जैसे – घोड़ा, घर

(II) यौगिक: जिनकी उत्पत्ति प्रत्यय, समास आदि से होती है जैसे – विद्यालय, रमेश

(III) योगरूढ़: यौगिक क्रिया से बने लेकिन निश्चित अर्थ में रूढ़ हो गये जैसे – जलज, दशानन"अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणालीन अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत प्रवीन" ।

– देव"शब्द एवं अर्थ के परस्पर संबंध को अभिधा कहते है"। –

जैसे – घर गंगा में है।

यहां व्यंजना है कि घर गंगा की भांति पवित्र एवं स्वच्छ है।

(2) लक्षणा शब्द शक्ति

जहां मुख्य अर्थ में बाधा उपस्थित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के आधार पर मुख्य अर्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ को लक्ष्य किया जाता है, वहां लक्षणा शब्द शक्ति होती है।

जैसे -मोहन गधा है। यहां गधे का लक्ष्यार्थ है मूर्ख।

(अ) लक्ष्यार्थ के आधार पर

इस आधार को लेकर लक्षणा के दो भेद हैं –

(अ) लक्ष्यार्थ के आधार पर
(ब) मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के सम्बन्ध के आधार पर
(स) मुख्यार्थ है या नहीं के आधार पर लक्षणा के भेद
(द) सारोपा एवं साध्यवसाना लक्षणा

1. रूढ़ा लक्षणा
2. प्रयोजनवती लक्षणा

(1) **रूढ़ा लक्षणा** : जहां मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, वहां रूढ़ा लक्षणा होती हैं।

जैसे –पंजाब वीर हैं -इस वाक्य में पंजाब का लक्ष्यार्थ है -पंजाब के निवासी। यह अर्थ रूढ़ि के आधार पर ग्रहण किया गया है अतः रूढ़ा लक्षणा है।

(2) **प्रयोजनवती लक्षणा** मुख्यार्थ में बाधा होने पर किसी विशेष प्रयोजन के लिए जब लक्ष्यार्थ का बोध किया जाता है, वहां प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

जैसे- मोहन गधा है -इस वाक्य में 'गधा' का लक्ष्यार्थ 'मूर्ख' लिया गया है और यह मोहन की मूर्खता को व्यक्त करने के प्रयोजन से लिया गया हैअतः यहां प्रयोजनवती लक्षणा हैं।

(ब) मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के सम्बन्ध के आधार पर

इस आधार पर लक्षणा के दो भेद हैं-

(1) गौणी लक्षणा (2) शुद्‌धा लक्षणा।

(1)गौणी लक्षणा –जहां गुण सादृश्य के आधार पर लक्ष्यार्थ का बोध होता है, वहां गौणी लक्षणा होती है।

जैसे-मोहन शेर है।

इस वाक्य में मोहन को वीर दिखाने लिए उसको शेर कहा गया है, अर्थात् मोहन में और शेर में सादृश्य है अतः यहां गौणी लक्षणा है।

(2) शुद्‌धा लक्षणा –जहां गुण सादृश्य को छोड़कर अन्य किसी आधार यथा-समीपता, साहचर्य, आधार-आधेय सम्बन्ध, के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया गया हो, वहां शुद्‌धा लक्षणा होती है।

यथा-लाल पगड़ी आ रही है।

यहां लाल पगड़ी का अर्थ है सिपाही। इन दोनों में साहचर्य सम्बन्ध है अतः शुद्‌धा लक्षणा है।

(स) मुख्यार्थ है या नहीं के आधार पर लक्षणा के भेद –

लक्ष्यार्थ के कारण मुख्यार्थ पूरी तरह समाप्त हो गया है या बना हुआ है,
इस आधार पर लक्षणा के दो भेद किए गए हैं-

उपादान लक्षणा   लक्षण लक्षणा।

(1) उपादान लक्षणा –जहां मुख्यार्थ बना रहता है तथा लक्ष्यार्थ का बोध मुख्यार्थ के साथ ही होता है वहां उपादान लक्षणा होती हैं।

जैसे-लाल पगडी आ रही है।इसमें लाल पगडी भी आ रही है और (लाल पगडी पहने हुए) सिपाही भी जा रहा है। यहां मुख्यार्थ (लाल पगडी) के साथ-साथ लक्ष्यार्थ (सिपाही) का बोध हो रहा है अतः उपादान लक्षणा है|

(2) लक्षण लक्षणा –इसमें मुख्यार्थ पूरी तरह समाप्त हो जाता है, तभी लक्ष्यार्थ का बोध होता है।

जैसे-मोहन गया है। लक्षण लक्षणा का उदाहरण हैं।

8209837844 www.ugc-net.com

(द) सारोपा एवं साध्यवसाना लक्षणा

(1)सारोपा लक्षणा– जहां उपमेय और उपमान में अभेद आरोप करते हुए लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो वहां सारोपा लक्षणा होती हैं।
इसमें उपमेय भी होता है और उपमान भी।
जैसे – उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
यहां उदयगिरि रूपी मंच पर राम रूपी प्रभातकालीन सूर्य का उदय दिखाकर उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया गया है अतः सारोपा लक्षणा है।
(2) **साध्यवसाना लक्षणा** –इसमें केवल उपमान का कथन होता है, लक्ष्यार्थ की प्रतीति हेतु उपमेय पूरी तरह छिप जाता है।
जैसे-जब शेर आया तो युद्ध क्षेत्र से गीदड़ भाग गए। यहां शेर का तात्पर्य वीर पुरुष से और गीदड़ का तात्पर्य कायरों से है। उपमेय को पूरी तरह छिपा देने के कारण यहां साध्यवसाना लक्षणा है।

(3) व्यंजना शब्द शक्ति

अभिधा और लक्षणा के विराम लेने पर जो एक विशेष अर्थ निकालता है, उसे व्यंग्यार्थ कहते हैं और जिस शक्ति के द्वारा यह अर्थ ज्ञात होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं।

जैसे – घर गंगा में है।यहां व्यंजना है कि घर गंगा की भांति पवित्र एवं स्वच्छ है।

1. शाब्दी व्यंजना **2. आर्थी व्यंजना**

जहां शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है और वह शब्द हटा देने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है वहां शाब्दी व्यंजना होती हैं।

जैसे –चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गम्भीर।को घटि ए वृषभानुजा वे हलधर के वीर।।यहां वृषभानुजा, हलधर के वीर शब्दों के कारण व्यंजना सौन्दर्य है।इनके दो-दो अर्थ हैं-

1. राधा, 2. गाय तथा 1. श्रीकृष्ण 2. बैल।

यदि वृषभानुजा, हलधर के वीर शब्द हटा दिए जाएं और इनके स्थान पर अन्य पर्यायवाची शब्द रख दिए जाएं, तो व्यंजना समाप्त हो जाएगी।

8209837844

शाब्दी व्यंजना को पुनः दो वर्गों में बांटा गया है
अभिधामूला शाब्दी व्यंजना
लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना।

(1) अभिधामूला शाब्दी व्यंजना –जहां पर एक ही शब्द के नाना अर्थ होते हैं, वहां किस अर्थ विशेष को ग्रहण किया जाए, इसका निर्णय अभिधामूला शाब्दी व्यंजना करती हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अभिधामूला शाब्दी व्यंजना में शब्द का पर्याय रख देने से व्यंजना का लोप हो जाता है तथा व्यंग्यार्थ का बोध मुख्यार्थ के माध्यम से होता है

जैसे- सोहत नाग न मद बिना, तान बिना नहीं राग। यहां पर नाग और राग दोनों शब्द अनेकार्थी हैं, परन्तु 'वियोग' कारण से इनका अर्थ नियन्त्रित कर दिया गया है। इसलिए यहां पर 'नाग' का अर्थ हाथी और 'राग' का अर्थ रागिनी है। अब यदि यहां नाग का पर्यायवाची भुजंग रख दिया जाए तो व्यंग्यार्थी हो जाएगा।

(2) लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना –जहां किसी शब्द के लाक्षणिक अर्थ से उसके व्यंग्यार्थ पर पहुंचा जाए और शब्द का पर्याय रख देने से व्यंजना का लोप हो जाए, वहां लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना होती हैं।

यथा –''आप तो निरै वैशाखनन्दन हैं।''

यहां वैशाखनन्दन व्यंग्यार्थ पर पहुंचना होता है। लक्षण है-मूर्खता।
अब यदि यहां वैशाखनन्दन शब्द बदल दिया जाए तो व्यंजना का लोप हो जाए, परन्तु 'गधा' रख देने से लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना तो चरितार्थ नहीं रहेगी।

(ब) आर्थी व्यंजना :

जब व्यंजना किसी शब्द विशेष पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित होती है, तब वहां आर्थी व्यंजना मानी जाती हैं। यथा – आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

।यहां नीचे वाली पंक्ति से नारी के दो गुणों की व्यंजना होती है-उसका ममत्व भाव एवं कष्ट सहने की क्षमता।

यह व्यंग्यार्थ किसी शब्द के कारण है अतः आर्थी व्यंजना है।

यह व्यंजना तीन प्रकार की हो सकती है-अभिधामूला, लक्षणामूला एवं व्यंजनामूला आर्थी व्यंजना।एक अन्य आधार पर व्यंजना के तीन भेद किए गए हैं-

1. वस्तु व्यंजना, 2. अलंकार व्यंजना, 3. रस व्यंजना।

1. **वस्तु व्यंजना** –जहां व्यंग्यार्थी द्वारा किसी तथ्य की व्यंजना हो वहां वस्तु व्यंजना होती हैं।

जैसे-उषा सुनहले तीर बरसती जय लक्ष्मी सी उदित हुई।उधर पराजित काल रात्रि भी जल में अन्तर्निहित हुई।

।यहां रात्रि बीत जाने और हृदय में आशा के उदय आदि की सूचना व्यंजित की गई है अतः वस्तु व्यंजना है।

2. अलंकार व्यंजना –

जहां व्यंग्यार्थ किसी अलंकार का बोध कराये वहां अलंकार व्यंजना होती हैं।
जैसे-उसे स्वस्थ मनु ज्यों उठता है क्षितिज बीच अरुणोदय कान्त।लगे देखने क्षुब्ध नयन से प्रकृति विभूति मनोहर शान्त।।यहां उत्प्रेक्षा अलंकार के कारण व्यंजना सौन्दर्य है अतः इसे अलंकार व्यंजना कहेंगे।

3. रस व्यंजना –

जहां व्यंग्यार्थ से रस व्यंजित हो रहा हो, वहां रस-व्यंजना होती है।
यथा –जब जब पनघट जाऊं सखी री वा जमुना के तीर।भरि-भरि जमुना उमडि चलति हैं इन नैननि के नीर।
।यहां 'स्मरण' संचारीभाव की व्यंजना होने से वियोग रस व्यंजित है अतः रस व्यंजना है।
आज के आर्टिकल में हम शब्द शक्ति के बारे में विस्तार से पढेंगे ताकि ये विषयवस्तु हमें अच्छे से तैयार हो ।

8209837844

www.ugc-net.com

प्रश्न :- 'वाक्यं रसात्मक काव्यम्' काव्य लक्षण के प्रणेता है?

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com